International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-01-2020; Accepted: 26-02-2020; published: 27-03-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 2; 2020; Page No. 44-46

निहाली भाषा की लोक-कथा का समाजभाषावैज्ञानिक विश्लेषण

अनामिका गुप्ता
भाषा प्रौद्योगिकी विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोधालेख निहाली की लोककथा 'ईर-एजेर' अर्थात 'दो भाई' के समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन एवं विश्लेषण पर आधारित है। इस शोधालेख में सर्वप्रथम निहाली भाषा की पृष्ठभूमि को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसके पश्चात निहाली भाषा की उल्लिखित लोककथा की लिपि को विस्तारपूर्वक हिंदी अनुवाद के साथ शोधालेख में सम्मिलित किया गया है जिसके अध्ययन एवं विश्लेषण उपरांत समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसात करते हुए निहाली भाषा में हिंदी भाषा के रुपमिक स्तर के कोड मिश्रण को व्यष्टि समाजभाषाविज्ञान की संकल्पना अनुरूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है और साथ ही समष्टि समाजभाषाविज्ञान की संकल्पना को अपनाते हुए भाषा जिस समाज में व्यवहार करती है, उस समाज की संरचना एवं आपसी संबंधों को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है। निहाली भाषा विलोपन की समस्या एवं संकट से ग्रस्त एक पृथक भाषा है। अतः प्रस्तुत शोधालेख इसके संरक्षण में एक छोटी सी भूमिका निभाने का दायित्व समझकर लिखा गया है।

मूल शब्द: निहाली, समष्टि एवं व्यष्टि समाजभाषाविज्ञान, रुपमिक कोड मिश्रण, भाषा का समाजशास्त्र, ईर-एजेर।

प्रस्तावना

निहाली भाषा जिसे नहाली के नाम से भी जाना जाता है, ऐसी भाषा है जिसका अन्य किसी भाषा से कोई संबंध नहीं है। आजतक विभिन्न भाषाविद इस भाषा के किसी अन्य भाषा से संबंध होने की केवल संभावनाएँ जताते आए हैं। यह भाषा सन 1991 में हुई जनगणना अनुसार भारत के केंद्रीय पश्चिमी क्षेत्रों में (मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र) लगभग 2000 लोगों द्वारा व्यवहार में लाई जाती है। मध्यप्रदेश के निमार जिले के टेंबी गाँव के आस-पास, तपती नदी के दक्षिणी भाग में निहाली जनजातीय क्षेत्र है। इस भाषा ने अन्य पड़ोसी या समीपतम भाषाओं से बहुत अधिक संख्या में शब्द भंडार अपनाया है जिसमें '60 से 70 प्रतिशत शब्दों का आगमन 'कोरकू' भाषा से हुआ है और कुछ शब्द द्रविड़ एवं मराठी भाषा से लिए गए हैं किंतु इस विषय पर अध्ययन करने के पश्चात यह भी पाया गया है कि इस भाषा ने हिंदी के भी बहुत से शब्दों को कुछ परिवर्तनों के साथ आत्मसात किया है।

निहाली भाषा को सर्वप्रथम अन्य भाषाओं से अलग रखकर विचार करने का श्रेय भाषाविद 'फ्रांसिस्कस कुईपर' को दिया जाता है जिन्होंने इस तथ्य को दावे के साथ प्रस्तुत किया कि निहाली भाषा का पारिवारिक संबंध किसी भी भारतीय भाषा के साथ नहीं है चाहें वह कोरकू हो, द्रविड़ हो या मराठी हो, यह अलग बात है कि इन भाषाओं के संपर्क में आकर इस भाषा ने इन भाषाओं के शब्दों को अपनाया हो। कुईपर निहाली के संदर्भ में उल्लेख करते हैं कि "निहाली भाषियों का कोरकू भाषियों के साथ हीनतापूर्ण संबंध था अर्थात वे कोरकू समाज से नीचे समझे जाते थे और कोरकू समाज के साथ रहने के कारण निहाली भाषी द्विभाषिक थे। वे निहाली एवं कोरकू दोनों ही भाषाओं का समान रूप से व्यवहार करने में सक्षम थे और निहाली भाषा का व्यवहार वे तब अधिक करते थे जब वे कोरकू भाषियों से कुछ गुप्त रखने का उद्देश्य रखते थे। कुईपर इस बात की संभावना दर्शाते हैं कि निहाली भाषा संभवतः चोरों द्वारा व्यवहार में लाई जाने वाली एक गुप्त भाषा थी। (कुईपर, 1962)

इसके अतिरिक्त भाषाविद 'नोरमन ज़ाईड' निहाली भाषा की परिस्थिति को विस्तारपूर्वक व्याख्यायित करते हुए कहते हैं कि "निहाली के इतिहास में 19वीं शताब्दी में एक शासक द्वारा निहाली समुदाय का सफाया करने का प्रयास किया गया था जिसके परिणामस्वरूप क्रोधित निहाली समुदाय ने विनाशकारी लूटमार करना आरंभ कर दिया था। उसी समय से निहाली भाषियों की संख्या बहुत कम रह गई और इनका मुख्य कार्य चोरी एवं डकैती बन गया। यह समुदाय परिस्थितियों के अनुसार बहुभाषिक बन गया और निहाली भाषा का व्यवहार गुप्त भाषा के रूप में लारने लगे जिससे कि अन्य भाषा-भाषी इस भाषा में संप्रेषित संदेशों को समझ न पाएँ (ज़ाईड, 2016, P.435) किंतु इस विवरण का कतिपय यह अर्थ नहीं कि यदि निहाली भाषा एक गुप्त भाषा के रूप में प्रस्तुत होती थी तो उसका अपना कोई साहित्य नहीं है। निहाली भाषा में भी कुछ रचनात्मक कार्य पाया जाता है किंतु समस्या केवल इतनी है कि इसे पूर्णतः व्याख्यायित कर पाना कठिन कार्य है।

प्रस्तुत शोधालेख में निहाली भाषा के एक लोक कथा 'ईर-एजेर' का समाजभाषावैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है जिससे यह पता लगाया जा सकता है कि निहाली साहित्य की क्या प्रकृति है और इसके साहित्य का क्या महत्व है साथ ही समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि के माध्यम से यह भी पता चल जाएगा कि भाषा का प्रयोग किस प्रकार हुआ है और भाषा का स्वरूप क्या है? किंतु विश्लेषण से पूर्व यह जानना भी नितांत अनिवार्य है कि लोकसाहित्य स्वयं में क्या महत्व रखता है क्योंकि भाषा, संस्कृति एवं समाज एक-दूसरे के पर्याय होते हैं और आपस में परस्पर संबंध रखते हैं जिसके कारण किसी एक को भी समझने हेतु इन तीनों के स्वरूप को जानना अनिवार्य होता है और साहित्य इन तीनों के मिश्रण से ही तैयार होने वाला रस होता है जिसका आस्वादन विस्तृत ज्ञान के आधार पर ही किया जा सकता है।

लोकसाहित्य के संदर्भ में डॉ. देवराज उपाध्याय का कथन है कि "विश्व के संपूर्ण वाङ्मय का प्रधान उत्स लोक है, कल्पनाओं, भावनाओं और कथानकों की उर्वरी भूमि लोक-मानस है।" इसके अतिरिक्त ईलविन मार्टिन का मत है कि संसार के समस्त कथा साहित्य का जन्म लोक-कहानियों से हुआ है। ऐसा भी समय आया है जबकि जातीयता और राष्ट्रियता की गंभीर तथा अतिशय भावना ने संपूर्ण राष्ट्र को 'लोक कवि' के रूप में परिवर्तित कर दिया है। उक्त मतों को प्रस्तुत करने का उद्देश्य मात्र इतना है कि लोकसाहित्य के महत्व को समझाया जा सके जो कि आज की युवा पीढ़ी से कोसों दूर जा चुका है। निहाली भाषा के संदर्भ में यह याद दिलाना व्यर्थ है कि यह भाषा विलोपन के संकट से ग्रस्त भाषा है और इसका संरक्षण बहुत आवश्यक है। किंतु यह इस परिस्थिति में क्यों है इसका उत्तर लोकसाहित्य के महत्व में ही कहीं छिपा हुआ है। प्रत्येक समुदाय का यह दायित्व होता है कि वह अपनी परंपरा, भाषा, संस्कृति एवं साहित्य को अपनी अगली पीढ़ी तक हिफाज़त के साथ पहुंचाए और उस पीढ़ी को इन सभी सामाजिक आत्माओं को जीवित रखने हेतु प्रेरित करता रहे किंतु जब ऐसा नहीं होता है तो

परिस्थितियाँ कुछ निहाली भाषा जैसी हो जाती हैं।

निहाली भाषा की लोक-कथा : ईर-एजेर (दो भाई)

1. बिडी साना-डुकरि अनुवाद- दो बूढ़ा-बुढ़िया थे।

2. माका हिटकेल-कि ईर-एजेर पालसो हिटकेल
अनुवाद- उनके दो पुत्र थे।

3. माका एतला पोसड्ग्किंदान
अनुवाद- वो एक साथ रहते थे।

4. करता:- करता केयदिंकी पालषितकेल जावानिदान
अनुवाद- धीरे-धीरे समय के साथ दोनों बच्चे जवान हो गए।

5. भागनना भोला बकादे सतुराय
अनुवाद- बड़ा पुत्र भोला था और छोटा बेटा चतुर था।

6. माका बकादे नान-हुवाय इंगिन-टेकी जाय-जात दौलत
मियां इंगिन-हिस्सा मांगे जी जो हिंका बेथे हुंगाय
जो दूसरा बियाकि ईरक
अनुवाद- एक दिन छोटे भाई को पता नहीं क्या हुआ और वह बोला कि मेरे हिस्से में जो भी जमीन और पैसा
आदि है वह मुझे दे दो। मैं यहाँ नहीं रहना चाहता, मैं दूसरे गाँव जाऊँगा।

7. अस्सा माका नेहिस्सा कोरबे बे बावरेरे दो दूसरा
बियाकि ईरि
अनुवाद- पिता ने कहा ठीक है अपना हिस्सा ले लो और दे दिया और वह दूसरे गाँव चला गया।

8. दाम इम्बृत्तान यस्की त्यीय काय कायदिन्ता मजाकी
त्यीय बसताकी दाम पोलोरी अते
अनुवाद- जब तक पैसा रहा छोटे भाई ने खूब मज़े किए किंतु बाद में उसका पैसा खत्म हो गया।

9. बसताकी पाती जो नंकाबी हूतो कामा बो
भाते एम्बाजान हिडाकी दो पाती
अनुवाद- अंत में छोटा भाई कहने लगा कि मेरे पास करने को कोई काम नहीं है, मुझे अपने बड़े भाई के घर की
तरफ जाना चाहिए और चल दिया।

10. जसाका पाटो दो पौंसार कमाकिनी
अनुवाद- जैसे ही वह घर पहुँचा, खाने-पीने के साथ जश्न मनाया जाने लगे।

11. भागदायरे खेतो कामाय हिडाकोन पाती
केलाबूटा खुसबू घनिकिनी
अनुवाद- बड़ा भाई जन खेत से काम कर के लौट रहा था तो उसे घर से खुशबूदार खाने की महक आई।

12. काय दायरे नन्हुवायकि बारानीबारा सावीस-वर्सो
जेरकिनि ही-रंगो खाना-पीना हूतो कीला
अनुवाद- तो बड़े भाई ने सोचा, आखिर क्या बात है, पिछले 20 वर्षों में (जबसे छोटा भाई गया है) ऐसा
खुशबूदार खाना कभी घर में नहीं बना।

13. भाग्यातान बिसारे कि हिंकी नानकों पार्टी सालू
अनुवाद- बड़े भाई ने नौकर से पूछताछ की कि किस उपलक्ष्य में यह भोज तैयार किया जा रहा है ?

14. काय नानहुवाय कि नेनेगिता पाती
अनुवाद- यह उत्सव आपके छोटे भाई के लौट आने के उपलक्ष्य में मनाया जा रहा है।

15. ओकू दायरे नान हुवाय-कि एतेयना हिस्सा कोरी दो हिंकी
एतेय ननका पाती
अनुवाद- बड़े भाई ने सोचा कि छोटा भाई तो अपना हिस्सा ले चुका है तो यह अब वापस क्यों लौटा है ?

16. बावरेना नान हुवाय जो ह्याँ खेतो-बारी-की कामायका
दो अबितक अंग्की हुवायकी होतो सेटटोका
एतेयना हिस्सा कोरी दो एतेयना हिंकी पाटोकें
ननका कामो बेठे
अनुवाद- पिताजी- मैं सारा दिन खेत में काम करता रहता हूँ तब भी मुझे इस तरह का अच्छा खाना नहीं दिया
जाता लेकिन इसने अपना हिस्सा अलग लिया और बिना काम के घर लौट आया तब भी इसका इतना
सत्कार !

17. बावरेरे नन्हुवायकि बेटा हाँ जाय-जात दौलत
लालाका जेरे त्येबेन
उठवाय काय हूतो मांदी नीबि पालसो दो एतेयबि पालसो
जो लालो बेट्टी हूवाय
अनुवाद- पिता अपने बड़े बेटे को समझाते हुए बोला कि बेटा ये जमीन जायदाद सब तुम्हारा ही तो है। इसे खाना खाने दो कुछ मत बोलो, तुम भी मेरे बेटे हो और यह भी मेरा बेटा है। मैं तो समझा था कि मेरा बेटा मर चुका है लेकिन मैं खुश हूँ कि तुम्हारा छोटा भाई घर लौट आया है।

रुपमिक स्तर पर कोड मिश्रण: (व्यष्टि समाजभाषाविज्ञान)

निहाली भाषा के संदर्भ में यह तो प्रचलित तथ्य है कि इस भाषा ने दूसरी भाषाओं की लगभग 75 प्रतिशत शब्दावली को अंगीकार किया है और केवल 25 प्रतिशत शब्दावली ही वर्तमान समय में निहाली भाषा की मूल शब्दावली के रूप में स्वीकार की जा सकती है। किंतु जब 'फ्रांसिस्कस कुईपर' इस बात का दम भरते हैं कि निहाली भाषा का किसी अन्य भाषा से कोई नहीं और यह स्वयं में पृथक भाषा है जिसकी व्युत्पत्ति का आज तक अनुमान नहीं लगाया जा सकता तो यह बात कुछ संदर्भों में कमज़ोर सी पड़ती प्रतीत होती है जिसका उदाहरण निहाली भाषा की लोककथा 'ईर'एजेर' (i:r-ejer, Two Brothers) है। प्रस्तुत लोककथा के अंतर्गत निहाली भाषा के अतिरिक्त कुछ हिंदी भाषा के शब्द भी निहाली भाषा के अनुरूप थोड़े परिवर्तित स्वरूप में प्राप्त होते हैं जैसे:

1. डुकरी – डोकरी (हिंदी/ब्रजभाषा) -- अर्थ – वृद्ध महिला
2. भोला – (हिंदी) -- अर्थ – मासूम
3. सतुराय – (हिंदी) -- अर्थ – चतुर
4. जायज़ात – (हिंदी/उर्दू) -- अर्थ – संपत्ती
5. दौलत – (हिंदी/उर्दू) -- अर्थ – संपत्ति
6. हिस्सा – (हिंदी/उर्दू) -- अर्थ – भाग
7. बैठे – (हिंदी) -- अर्थ – बैठे, विराजना
8. दूसरा – (हिंदी) -- अर्थ – अन्य, द्वितीय, दूसरे
9. अस्सा – (हिंदी) -- अर्थ – सहमति हेतु बोले जानेवाला शब्द अच्छा।
10. दाम – (हिंदी) -- अर्थ – अर्थ, पैसा

11. मजाकी – (हिंदी) -- अर्थ – मज़ा करना, आनंद उठाना
12. काम – (हिंदी) -- अर्थ – काम करना (क्रिया)
13. खेती या खेतो – (हिंदी) -- अर्थ – खेत
14. साव्वीस – (हिंदी) -- अर्थ – चौबीस
15. वर्सो – (हिंदी) -- अर्थ – वर्षों
16. खाना-पीना – (हिंदी) -- अर्थ – खाना-पीना, आहार, ग्रहण करना
17. सालू – (हिंदी) -- अर्थ – चालू

उपर्युक्त 17 शब्दों की सूची यह दर्शाने हेतु पर्याप्त उदाहरण है कि निहाली भाषा ने केवल कोरकू, मराठी, द्रविड़ एवं अन्य आदि भाषाओं से ही शब्दों को स्वीकार नहीं किया अपितु हिंदी के भी कई शब्दों को निहाली समुदाय ने अपनी भाषा के अंतर्गत स्थान प्रदान किया है जो कि इस तथ्य की पुष्टि एवं स्थापना करता है कि निहाली भाषा केवल कोरकू, मराठी एवं द्रविड़ भाषाओं के संपर्क में ही नहीं थी बल्कि हिंदी भाषियों के संपर्क में भी एक दीर्घ अपढ़ी हेतु रही होगी तभी तो हिंदी शब्दों का कुछ परिवर्तित रूप निहाली भाषा में दिखाई देता है। वस्तुतः निहाली भाषा में 'चा' ध्वनि का उच्चारण नहीं है इसलिए वे लोग 'च' के स्थान पर 'स' का उच्चारण करते हैं जिसके चलते 'चालू' शब्द 'शालू' के रूप में प्रस्तुत होता है किंतु आर्थिक समानता के चलते यह पता चलता है कि जिस 'सालू' शब्द का प्रयोग निहाली भाषा में होता है वह हिंदी शब्द 'चालू' का ही श्लेष मात्र परिवर्तित रूप है। इसके अतिरिक्त एक शब्द बृजभाषा का भी निहाली भाषा की इस लोककथा में दिखाई पड़ता है जो कि अपवाद स्वरूप समझा जा सकता है किंतु ब्रजभाषा का शब्द निहाली समुदाय तक कैसे पहुँचा यह विचारणीय बिंदु है।

भाषा का समाजशास्त्र : (समष्टि समाजभाषाविज्ञान)

भाषा का समाजशास्त्र समझने हेतु भाषा के समाज में जाना अर्थात भाषा किस समाज में बोली जाती है यह जानना अधिक अनिवार्य होता है। यदि स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो भाषा का समाजशास्त्र जानने हेतु भाषा का सामाजिक स्तर एवं समाज की संरचना को जानना आवश्यक है। प्रत्येक समाज की अपनी कुछ विशेषताएँ एवं भिन्नताएँ होती है जिनका अध्ययन कर उस समाज की भाषिक विशेषता को जाना जा सकता है। निहाली भाषा की प्रस्तुत लोककथा 'ईर-एजेर' (दो भाई) समाज की प्रकृति को दर्शाती है। एक समाज एक परिवार होता है और परिवार के संचालन हेतु धन से कहीं अधिक प्राथमिकता प्रेम की होती है। प्रस्तुत लोककथा उसी प्रेम का विवरण प्रस्तुत करती है जो एक पिता और उसके बेटों के बीच सदैव बना रहता है। एक वृद्ध दंपत्ति के दो पुत्र हैं जिसमें से छोटा पुत्र थोड़ा चतुर है और बड़ा बेटा थोड़ा भोला है। छोटा पुत्र अपनी पिता की संपत्ति में से अपना आधा हिस्सा लेकर दूसरे गाँव चला जाता है और जीवन का सुख कुछ दिनों तक भोगता है वहीं बड़ा बेटा भोला है और अपने माता-पिता का ख्याल भी रखता है और साथ ही सारा दिन खेत में काम करके परिवार को पालता है किंतु जब छोटा भाई पैसा खत्म हो जाने के बाद 24 वर्षों के पश्चात घर वापस आ जाता है और उसके स्वागत में अच्छा खान बनता है तो यह देख बड़े बेटे को आश्चर्य होता है और दुख भी क्योंकि इतने वर्षों में कभी उसकी इतनी देख रेख नहीं हुई होती है किंतु अंत में उन दोनों के पिता उन्हें समझाते हैं कि वे दोनों उनके बेटे हैं और उन्हें पैसे और दौलत को लेकर एक दूसरे से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। यह लोककथा सामाजिक सीख प्रदान करने में बहुत प्रभावशाली सिद्ध होती है क्योंकि समाज एक परिवार से निर्मित होता है और परिवार में ईर्ष्या का कोई स्थान नहीं होता। संभवतः यही निहाली भाषा की प्रकृति है, इस भाषा ने किसी भी संपर्क में आई भाषा से ईर्ष्या न दर्शाते हुए सभी भाषाओं की शब्दावलियों को अंगीकार कर अपनी अलग अस्मिता निर्मित की है साथ ही अपनी वास्तविक अस्मिता को संरक्षित करने के कुछ प्रयास भी किए हैं जो कि इस लोककथा के द्वारा सिद्ध हो जाता है।

निष्कर्ष

निहाली भाषा की वाक्य संरचना की प्रकृति बिलकुल हिंदी भाषा की वाक्य संरचना के अनुरूप है जिसमें 'कर्ता-कर्म-क्रिया' का क्रम निहित है (नागराज, 2014) और साथ निहाली भाषा का समाज भी हिंदी भाषा की प्रकृति के समान तालमेल खाता है। इसका आशय यह है कि निहाली भाषा किसी समय में हिंदी भाषियों के साथ एक लंबा समय व्यतीत कर चुकी है और इस भाषा में प्रयुक्त हिंदी शब्दावली इस तथ्य का साक्ष्य स्वतः प्रस्तुत कर देती है। निहाली समाज ने अपने लोकसाहित्य से परिचित कराकर कुछ संदर्भों में अपनी अस्मिता और भाषा को संरक्षित करने हेतु एक कदम उठाया है किंतु आज के वर्तमान युग में यह प्रत्येक भाषावैज्ञानिक शोधकर्ता का दायित्व है कि इस क्षेत्र में निहाली और निहाली जैसी भाषाओं के संरक्षण हेतु कार्य करें क्योंकि यह भारत की अनेकता में एकता की विशेषता कि सुशोभित करता है।

संदर्भ सूचि

1. कुईपर, एफ़. बी. (1962). नहाली : ए कम्पेरेटिव स्टडी. एम्स्टर्डम : एन. वी. नूर्ड- होलेण्ड्श्चे यूइत्गीर्स मात्श्चाप्पिज.
2. ज़ाइड, एन. एच. (2016). मुंडा एंड नॉन-मुंडा औस्ट्रोशिएटिक लैंगवेजेस. बर्लिन: बोस्टन: दे गृयतर.
3. नागराजा, के .एस. (2014). दि निहाली लैंगवेज: ग्रामर, टेक्स्ट्स एंड वोकेबुलरी. मैसूर: सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंगवेजेज़.
4. मोहन , एस. (2014, 1). नाऊन मोरफोलोजी: निहाली एंड कोरकू. रिट्रीव्ड 9 16, 2018, फ्रोम.
5. वार्डोफ, आर. (2009). एन इंट्रोडक्षण टू सोशियोलिंगुइस्टिक्स. यूनाइटेड किंग्डम: विलेय- ब्लैकवेल.
6. https://www.academia.edu:https://www.academia.edu/1940 3464/Noun_morphology_Nihali_and_Korku